पंचम अध्याय : रसखान के काव्य में प्रेम का स्वरूप

रसखान के काव्य में प्रेम के स्वरूप को मध्यकालीन काव्यधारा के प्रकाश में समझा जा सकता है। मध्यकालीन काव्यधारा भक्ति रस से प्रवाहित है। भक्ति प्रेम–स्वरूपा है।

रसखान के काव्य में प्रेम का स्वरूप समझने के लिए रसखान के जीवन में झाँकना आवश्यक है, उनके जीवन सूत्र उनकी रचनाओं में प्राप्त होते हैं।

रसखान के काव्य में प्रेम की वेगवती धारा प्रवाहित होती है उसमें इतना प्रचंड वेग है कि पाठक को अचानक बहा ले जाती है। इस महान कवि के जन्म–समय, शिक्षा–दीक्षा, कार्य–व्यवसाय निधन–काल आदि के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। फिर भी, विद्वानों ने उनकी रचनाओं के कतिपय संकट सूत्र ग्रहण कर उनके जीवन–वृत्त के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत किये हैं :

देखि गदर हित साहब, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा–वंश की, ठसक छोरि रसखान।।
प्रेम निकेतन श्री बनहिं, आई गोवर्धन धाम।
लहयो सरन चित चाहिके, जुगल सरूप ललाम।।[1]

इन पंक्तियों में 'गठर' और 'दिल्ली श्मशान बन जाने' का समय विद्वानों ने 1555 ई0 अनुमानित किया है क्योंकि इसी वर्ष मुगल–सम्राट हुमायूं ने दिल्ली के सूवंशीय पठान शासकों अपना खोया हुआ शासनाधिकार पुनः हस्तगत किया था।

इस प्रकार इस घटना का काल 1555 ई0 है, जिसके आधार पर रसखान का जन्मकाल 1533 ई0 मानना समीचीन प्रतीत होता है। जहां तक निवास स्थान की बात है 'प्रेमवाटिका में स्वयं कवि द्वारा दिल्ली छोड़कर गोवर्धन धाम जाने के उल्लेख से उनका जन्म स्थान एवं प्रारम्भिक निवास दिल्ली के आस–पास मानना उपयुक्त है।

1. सं0 डॉ0 नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0–236

यह स्वीकार किया जाता है कि रसखान ने गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से बल्लभ–सम्प्रदाय के अन्तर्गत दीक्षा ली थी। उनके काव्य में अन्य बल्लभानुयायी कृष्ण भक्त कवियों जैसे प्रेम माधुरी एवं भक्ति शैली से इस बात की पुष्टि होती है। 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में भी उन्हें वल्लभ सम्प्रदायानुयायी बताया गया है। 'मूल गुसाई चरित' में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा स्वरचित 'रामचरित मानस' की कथा सर्वप्रथम रसखान को सुनाने का उल्लेख है : ''जमुना तट पै त्रय वत्सर लौं' रसखान जाई सुनावत भौ'' रसखान–काव्य के प्रायः सभी समीक्षक इस बात पर सहमत हैं कि 'प्रेम वाटिका' (1614) उनकी अन्तिम काव्य कृति है। संभवतः इसकी रचना के कुछ ही वर्ष पश्चात् 1618ई0 के लगभग उनका देहावसान हो गया होगा।

रसखान का सम्पूर्ण कृतित्व अभी तक प्राप्त नहीं है। 'प्रेम वाटिका' और 'दान लीला' नामक विशिष्ट आकारबद्ध कृतियों के अतिरिक्त उनकी सम्पूर्ण वाणी मुक्तक सवैये में आबद्ध है, जिन्हें विभिन्न संग्रहकर्ताओं ने अपनी–अपनी रूचि के अनुसार संकलित किया है। वर्तमान समय में सर्वाधिक प्रचलित संकलन 'सुजान रसखान' है। इधर कल्याण के 'सन्तवाणी अंक' में रसखान की एक अन्य लघु कृति 'अष्टयाम' प्रकाशित हुई है। इस प्रकार रसखान की प्रमुखतः चार रचनाएं प्रामाणिक मानी जा सकती हैं। सुजान रसखान, प्रेम वाटिका, दानलीला, अष्टयाम। 'सुजान रसखान' स्फुट छन्दों का संग्रह है, जिसमें 181 सवैये, 17 कवित्त, 12 दोहे तथा 4 सोरठे हैं।

उन छन्दों का प्रतिपाद्य भक्ति, प्रेम, राधाकृष्ण की रूप माधुरी, वंशी–मोहिनी एवं कृष्ण लीला सम्बन्धी सरस प्रसंग है। 'प्रेम वाटिका' के अन्तर्गत कवि ने राधा कृष्ण को प्रेमोद्यान के मालिन–माली मानकर प्रेम के गूढ़ तत्व का सूक्ष्म निरूपण किया है। यह 53 दोहे की लघु कृति है। 'दान लीला केवल 11 छन्दों का छोटा सा पद्य–प्रबन्ध है, जिसमें कवि ने प्रसिद्ध पौराणिक प्रसंग का राधाकृष्ण संवाद के रूप में चित्रित किया है। 'अष्टयाम' में संकलित कई दोहों के अन्तर्गत श्रीकृष्ण के प्रातः जागरण से रात्रि शयन पर्यन्त उनकी दिनचर्या एवं विभिन्न क्रीड़ाओं का वर्णन है।

रसखान भक्त कवि है। वस्तुतः वे 'भक्त' और 'कवि' से भी पहले एक सहृदय भावुक व्यक्ति है। उनका अन्तर प्रेम–ताप की उष्णता से विगलित होकर मानो विविध भाव सरणियों के

रूप में उमड़ पड़ा है। उनकी इस एकान्तिक प्रेममयी उमंग ने उनके काव्य को सचमुच 'रस की खान' बना दिया है। बादशाह वंश के जन्मजात मुसलमान रसखान ने स्वयं को राज्य लिप्सा जन्य द्वन्द्व से मुक्त कर जिस श्रद्धा, प्रेम और भक्तिमय रस सागर में निमज्जित किया, उसी में उनके वाणी का विलास यशधन के निमित्त था। उन्होंने तो अनन्त अलौकिक रस के आगार श्रीकृष्ण के लीला–गान रसखानि वही रसखानि वही रसखानि जु है रसखानि, सो है रसखानि।[1]'' प्रेम तत्व के निरूपण में रसखान को अद्‌भुत सफलता मिली है। उनका प्रेम वर्णन बड़ा सूक्ष्म, व्यापक एवं विशद है। उनके काव्य का प्रमुख रस श्रृंगार है, जिसके आलम्बन है – श्रीकृष्ण उनके रूप पर मुग्ध राधा एवं गोपिकाओं की मनः स्थिति के चित्रण के माध्यम से रसखान ने श्रृंगार की मधुर अभिव्यंजना की है। श्रृंगार के उपरांत रसखान–काव्य में चित्रित दूसरा प्रमुख रस वत्सल है। श्रीकृष्ण के बाल–रूप की माधुरी का वर्णन उन्होंने यद्यपि गिने–चुने छन्दों में ही किया है, पर उनकी काव्यात्मक गरिमा सूर और तुलसी के बाल वर्णन की समता करने में भली–भांति सक्षम हैं। उसका एक निदर्शन नीचे प्रस्तुत है :

धूरि परे अति सोभित स्याम जू कैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अंगना पग पैंजनि बाजति पीरी कछोटी।
वा छवि को रसखानि विलोकत बारत काम कला निधि कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि हाथ सो ले गयो माखन रोटी[1]।

यहाँ वात्सल्य के प्रेम स्वरूप का मनोरम रूपांकन है। रसखान में प्रेम भक्ति भाव बनकर आया है।

रसखान का प्रेम श्रृंगार रस के भाव से भावित होकर भक्ति भाव में परिणत होता है, उनका प्रेम वात्सल्य रूप में द्रवित होता है।

भक्ति भाव

यद्यपि रसखान बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित और आचार्य विट्ठनाथ के शिष्य थे तथापि उनकी भक्ति को किसी सम्प्रदाय विशेष से जोड़ना अथवा भक्ति की किसी विशिष्ट शास्त्रीय पद्वति का अनुगामी मानना उचित नहीं। क्योंकि रसखान मूलतः प्रेम–दीवाने हैं। प्रेम ही उनके इस लोक और परलोक का लक्ष्य हैं। वे ज्ञान, कर्म, उपासना–पूजा से भी परे मानते हैं प्रेम को।

''ज्ञान, कर्म, अरू उपासना, सब अहमिति को मूल।[2]
दृढ़ निश्चय नहिं होत–बिन, किए प्रेम अनुकूल।।
'' दंपति सुख अरू विषयरस, पूजा, निष्ठा, ध्यान।
इन तें परे वखानिए, शुद्व प्रेम रसखान ।।''

वैष्णव भक्ति–पद्वति में नवधा–भक्ति को सर्वाधिक महत्व दिया गया हैं। कहना न होगा कि नवधा–भक्ति के सोपानों –श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पद–सेवा, अर्चना, बन्दना, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन–का निर्वाह रसखान काव्य में नहीं हुआ है। हिन्दी में महाकवि सूर ने भक्ति में माधुर्य–भाव का समावेश कर हिन्दी कवियों का मार्ग प्रशस्त किया हैं रसखान उसी के अनुगामी हैं वे इसी माधुर्य भाव के भक्त माने जा सकते हैं। उनकी मधुरा भक्ति या प्रेमा भक्ति प्रेम और माधुर्य की रश्मियों में आलोकित हैं। माधुर्य भक्ति के तीन प्रमुख अंग–रूप वर्णन, विग्ह–वर्णन तथा आत्मसमर्पण–रसखान काव्य में पाये जाते है।

राधा–कृष्ण की रूप–राशि को उन्होने अत्यन्त सफलतापूर्वक रेखांकित किया हैं। कृष्ण की अन्यान्य मनोहरी छबियां 'सूजान रसखान' में अंकित हैं। बांसुरी की मधुर तान छेड़ते कृष्ण, कटाक्ष–पात करते कृष्ण, अलबेली वेश–भूषा धारण किये कृष्ण, काजल लगाये, पैजनियां पहने बाल–कृष्ण आदि अनेक रूपाकृतियाँ रसखान ने अपने काव्य में समेटी हैं। कृष्ण का श्रृंगार मां जसोदा ने किया हैं। उस रूप पर गोपियां बलिहारी है और जसोदा के भाग्य की सराहना करती हैं।

2. 2/1 – प्रेम वाटिका – दोहा – 12

''आजु गई हुती भोरही हों रसखानि रई कहि नन्द के भोनहिं[3]।
बाको जियो जुग लाख करोर जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।।
वेल लगाइ लगाइ कै अंजन भौंह बनाइ बनाइ डिठौनहिं।

डालि हमेलनि हार निहारत बारत ज्यों चुचकारत छौनहिं।।''

युवा कृष्ण का रूप ब्रज बनिताओं को विभोर करने वाला है। उनकी विलक्षण रूप–राशि का देखकर मुग्ध न हो, लोक–लाज का परित्याग कर उनकी दीवानी न बन जाएं ऐसी कौन स्त्री ब्रज में है? उस सौंदर्य पर दृष्टि ठहरती नहीं, वह प्राणों को बीधने वाला सौंदर्य है। यथा–

''लोक की लाज तजी तबहीं जब देखो सखी ब्रजचन्द सलोनो[4]।
खंजन मीन सरोजन की छवि गंजन नैन लला दिनहोनो।।,
रसखानि निहारि सकेंजु सम्हारि कै कोतिय है वह रूप सुठोनो।
भौंह कमान सौं (जोहन) का सब बेधत प्राननि नन्द का छोनो।।
सोहत है चैदवा सिर मौर के जैसियै सुन्दर पाग कसी है।
तैसियै गोरज भाल विराजित जैसी हिये बनमाल लसी है।।

कृष्ण–सौन्दर्य का प्रभाव स्थायी और अमिट है। रूप के उस सम्मोहन से मुक्ति कहाँ? उन्माद छा जाता है। कुछ भी होश नहीं रहता।

''भौह भरी सुथरी अतिसै अधरानि रंगी रंग रातौ[5]।
कुण्डल लोल कपोल महाछबि कुजनि तें निकस्पो मुसिकातौ।।
रसखानि लखै मग छूटि गयो डग भूलि गई तन की सुधि सातौ।
फूटि गयो दधि का सिर भाजन टूटिगो नैननि लाज का नातौ।।

इसी तरह राधा के सौन्दर्य की अनेक छवियों उसकी भुकुटियों, नेत्र, चित, वन, शरीर का सुडौल गठन, देहयष्टि, मस्तक पर टीका आदि का मनोहर शब्दावली में यथास्थान वर्णन करने में रसखान पूर्णतः सिद्वहस्त हैं।

3. सुजान रसखान, सवैया – 10
4. वही – 13
5. वही – 22

''श्रीपुखयों न बखान सर्क वृषभान सुता जू को रूप उजारौ[6]।
हे रसखान तू ज्ञान संभान तरैनि निहार जू रीझन हारौ।।

चारू सिंदूर को लाल रसाल लसै ब्रज का भाल टिकारौ।
गोद में मानौ विराजत है घनस्याम के सारे को सारे कौ सारौ।।

माधुर्य भक्ति में विरह का महत्वपूर्ण स्थान हैं। रसखान ने विरह का मर्म–स्पर्शी वर्णन किया हैं। बसंत के आगमन पर भ्रमरों की अनुगूंज, कोयल की कूक सुनाई देने लगी है। प्रकृति पुष्पित होने लगी हैं। चारों ओर मादकता का संचार हैं किन्तु विरहणी के कृष्ण नहीं आये। कितने कठोर हैं?

''फूलत फूल सर्ब बन बागन बोलत भीर बसंत के आवत[7]।
कोयल की किलकार सुन सब कंत बिदेसन तें सब आवत।।
ऐसे कठोर महा रसखान जु ने कहु मोरी यें पार न पावत।
हूक सी सालत है हिय में जब बैनि कोयल कूक सुनावत।।

कृष्ण–बिछोह में मुरझाई विरहिणी की देह–बल्लरी, उसका निस्तेज यौवन, उसका कांतिहीन मुख, कृष्ण–आगमन के सन्देश पर इस प्रकार प्रफुल्लित, प्रदीप्त और विकसित हो उठा हैं, जिस प्रकार दीपक की लौ (बत्ती) उकसा देने पर सर्वत्र स्वर्णिम प्रकाश फैल जाता हैं।

''रसखान सुनाह वियोग के ताप मलीन महा दुति देह तिया की[8]।
पंकज सौ मुख गौ मूरझाय लगी लपटै बरै स्वांस हिया की।।
ऐसे में आवत कान्ह सुने हुलसै सुतनी तरकी अंगिया की।
यों जग जोति उठी तन की उकसाय देई मनौ बाती दिया की।।''

बिरह–वर्णन में रसखान ने कभी–कभी रीतिकालीन ऊहात्मक पद्वति का भी सहारा लिया है।

6. सुजान रसखान, सवैया – 260
7. वही – 225
8. वही – 100

''बिरहा की जु आँच लगी तन में तब जाय परी जमुना जल में।[9]
बिरहानल तें जल सूखि गयों मछली बहींछौड़ि गई तल में।।
जब रेत फटी अरू पताल गई तब शेष जर्‌यौ धरती–तल में।
रसखान तब इहि आंच मिटै जब आय कै स्याम लगै गल में।।

समग्रतः कहा जा सकता हैं कि रसखान काव्य में विरह–वर्णन सहज, स्वाभाविक और मार्मिक हैं। यदा कदा अतिशयोक्तिपूर्ण कथन भी हैं। वस्तुतः यह युग–युग से प्रियतम प्रभु से बिछुड़ी प्रीति–दुग्ध प्रणयाकुल आत्मा–रूप विरहिणी की व्यथा कथा है। यह व्यथा उनके पदों में ह्रदय के सम्पूर्ण आवेग से उच्छलित हैं। कवि अपने आराध्य का जन्म–जन्म से दास है। यही कारण हैं कि कवि की रूपा सवित, प्रेमासवित और तज्जन्य विरह की चरम परिणति उसके आत्मसर्पण में होती। प्रभु अनन्य हैं और कवि उनका अनन्य भक्त। उसका सारा जीवन, जन्म–जन्मांतर का जीवन कृष्णमय हो। जड़–जंगम किसी भी रूप या योनि में उसे आराध्य का सहवास, साहचर्य मिले यहीं उसकी मनोकामना हैं और यही प्रेम हैं और यही भक्ति।

''मानुष हों तो वहीं रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।[10]
जो पसु हौं तो कहा बसे मेरो चरों नित नन्द की धेनु भैझारन।।
पाहन हौं तो वहीं गिरि को जो धर्‌यों कर छव पुंरदर धारन।
जा खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी–कूल–कदम्ब की डारन।।

अपने अनन्य भक्ति–भाव के कारण ही रसखान कृष्ण–संरक्षण में स्वयं की पूर्ण निरापद अथवा तुलसी की शब्दावली में परम विश्राम की स्थिति में (पायी परम विश्राम राम समान हित नहीं कहूं।) पाते है।

''कहा करै रसखानि को कोऊ चुगल लवार।'' अथवा
''काहे को सोच करै रसखानि, कहि करिहै रविनंद विचारों।''

9. सुजान रसखान, सवैया – 226
10. सुजान रसखान – 11
11. सं0 विद्यानिवास मिश्र : रसखान रचनावली, पृ0–136।

जो परम दयालु, कृपाल भक्त वत्सल प्रभु कृष्ण सहायक है। ताखन जाखन राखियैं माखन–चाखन हारो सौ राखन कारो।'' रसखान भी अन्य कृष्ण भक्त कवियों की सिद्वान्ततः कृष्ण के निराकार निर्गुण रूप को स्वीकारतें हैं किन्तु व्यवहारतः वे सगुणोपासक हैं। भक्ति के लिए आलम्बन अनिवार्य है। सूर के शब्दों में–,

''रूप रेख गुन जाति जूगति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावै।[12]
सब विधि अगम विचारहि ताते सूर सगुन लीला पद गावै।।''

चूँकि निराकार निरालम्ब आराध्य के प्रति मन एकाग्र नहीं हो पाता इसीलिए सूर की भांति रसखान भी प्रभु के सगुण रूप के ही परम भक्त है। जो इस सचराचर सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहर्ता है, जो महान, विराट और निरंजन हैं, वह भी अपने सगुण–साकार–रूप में साधारण बालकों की भांति नंद जी के घर में मिट्टी ला रहा हैं। कैसा विलक्षण प्रभु हैं।

''कहा कहूं आली कछु कहती बनै न दसा,[13]
नंदजी के अँगना में कौतुक एक देख्यौ मैं।
जगत के ठाटी महापुरूष विराटी जो निरंजन
निराटी ताहि माटी खात देखो मैं।।

कृष्ण के सगुण भक्त–कवियों ने उन्हें अन्यान्य विशिष्टताओं से रेखांकित किया हैं। ये महत्त्वपूर्ण विशिष्टताएं ही उनकी लीलाओं (बाल लीला, रासलीला फागलीला, कुंजलीला आदि) के रूप में गृहीत है।

रसखान ने बाललीला अर्थात् कृष्ण के बचपन की अन्यान्य झांकियाँ प्रस्तुत की हैं माटी खाना, धूल–धूसरित होना, चुराकर माखन खाना, विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करना, अन्यान्य प्रकार से शरारतें करना, गोपियों की तरह–तरह से सताना तथा नंद–जसोदा का प्रेम प्रदर्शित करना आदि से सम्बद्व किया व्यापार बाललीला के अन्तर्गत वर्णित हैं। यथा–

12. सं0 विद्यानिवास मिश्र : रसखान रचनावली, पृ0–136 (सूर सागर से)
13. सं0 विद्यानिवास मिश्र : रसखान रचनावली, पृ0–136

''धूरि भरे अति सोभित स्यामजू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।[14]

खेलत खात फिरै अंगना पग पैजनी बाजति पीरि कछोटी।।

वा छवि को रसखान विलोकत बारत काम कला–निधि कोटी।

काग के भाग बड़े सजनी हरि सौं लैगयौ माखन रोटी।।''

कृष्ण की किशोरवस्था से सम्बद्व रामलीला के दृश्य बड़ी सफलतापूर्वक रसखान ने प्रस्तुत किए हैं।

''आज भटू मुरली बट के तट नन्द के साँवरे रास रच्यौं री।[15]

नैननि सैननि बैननि सों नहिं कोऊ मनोहर भाव बच्यौ री।।

जद्यपि राखन कौं कुल–कानि सबै ब्रज–बालन प्रान पच्यौ री।

तद्यपि वा रसखानि के हाथ विकानी को अन्त लच्यौं री।।'

फाग–लीला में राधा–कृष्ण और गोपियों के फाग खेलने के सुन्दर चित्र रसखान ने उतारे है। फागुन लगते ही ब्रजमंडल में धूम सज गयी हैं। ऐसी कौन नवयुवती हैं ब्रज में जो कृष्णाकर्षण से विवश न हुई हो? सभी लोकलाज त्याग कर कृष्ण–दीवानी हो रही हैं और सुवह से शाम तक कृष्ण के साथ फाग खेलने में तल्लीन हो रहीं हैं।

14. सुजान रसखान, सवैया – 18
15. वही – 62

''फागुन लाग्यौ सखी जब तें तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यौ है।[16]
नारि नवेली बचै नहिं एक विसेख मरै सबै प्रेम अंच्यौ हैं।।
सांझ सकारे बही रसखानि सुरंग गुलालन खेल मच्यौ हैं।
को सजनी निलजी न भई अरू कौन भटूजिंहिं मान बच्यौ।।''

रसखान ने कृष्ण की कुंज लीला, दानलीला, चीरहरण आदि का भी मनाहारी वर्णन किया हैं। कुंज लीला की एक छवि दृष्टव्य हैं–

''रंग भर्‌यो मुसकात लला निकस्यौ कल कुंजन तें सुखदाई।[17]
मैं तवहीं निकसी धर तें तकि नैन बिसाल की चोट चलाई।।
घूमि गिरी रसखानि तवै हरिनी जिमि बान ललजै गिरिनाई।
टूटि गयौ घर का सब बन्धन टुटिगौ आरज–लाज बड़ाई।।

उक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रसखान व्यवहारतः कृष्ण के सगुण स्वरूप के ही चहेते थे किन्तु कृष्ण के निर्गुण, निराकार रूप को मान्यता भी वे बराबर देते रहें हैं। यही कारण हैं कि उनके अलौकिकत्व की ओर उनकी दृष्टि बराबर रही हैं। उनके कृष्ण परम ब्रह्म हैं। वे चतुरानन, शिव आदि महादेवों के बंदित महाप्रभु हैं फिर भी गोपियों के संकेतों पर नाचते है। यथा–

''संकर से सुर जाहि जपैं, चतुरानन ध्यानन धर्म बढावै।[18]
शेष, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावै।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अभेद सुवेद बतावै।।
ताहिं अहीर की छोहरियां छछियां भरि छाछ पर नाच नचावैं।।''

रसखान का भक्ति भाव सौन्दर्य की पट भूमि में विकसित होता है, उनकी स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्तियां ही सौन्दर्य बन गई हैं। उनका भक्ति भाव प्रेम और माधुर्य भाव का निरूपण है। उनके अभिभक्ति का प्रेम तत्व सौन्दर्य निरूपण में साकारवान् हो उठा है।

16. सुजान रसखान, सवैया – 125
17. वही – 41
18. वही – 32

सौन्दर्य निरूपण :–

रसखान सौन्दर्य के सफल चितेरे है। प्रेम–प्रसंग में रसानुभूति उनके काव्य का अभिन्न अंग है। रसखान सिद्ध कवि हैं, उनका सौन्दर्य चित्रण स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति का सौन्दर्य हैं। उनका काव्य आंतर सादृश्य एवं अनुभूतिमय आत्म–स्पर्श का काव्य हैं। उनकी अनुभूति अभिधा और कभी–कभी लक्षणा के सहारे भाव–आवतों द्वारा संचारित होती हैं यद्यपि सौन्दर्य शास्त्रियों ने सौन्दर्य को गोपनशील माना हैं किन्तु रसखान और घनान्द का काव्य इसका अपवाद हैं। यहाँ कुछ भी गोपन नहीं सौन्दर्य विधायिनी कल्पनाओं युक्त भाव–चित्र इन कवियां की रचनाओं में बिखरे पड़े है। रसखान का काव्य तो स्वतः स्फूर्त काव्य है। उनकी अनुभूतियां अनिर्वचनीय आनन्द का उद्रेक करती हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने सौन्दर्य कों प्रकाम्प माना हैं। उनके अनुसार काम, प्रेम तथा सौन्दर्य परस्पर पूरक हैं। आंसू में ऐसा ही एक रूपक हैं।

'कामना सिंधु लहरता छवि पूरनिमा–सी छायी।
रत्नाकर बनी निखती मेरे शशि की परछाई।।' (आंसु–प्रसाद)

रसखान के काव्य में सौन्दर्य काम प्रेम और माधुर्य परस्पर पूरक बनकर आये हैं। कृष्ण–सौन्दर्य कामना को जन्म देता है। उस सौन्दर्य का सम्मोहन ही गोपियों के रति–भाव का बीज हैं। यही रति–भाव विशुद्व प्रेम और माधुर्य में परिवर्तित हो जाता है। और माधुर्य–प्रेम ही उनका जीवन–सर्वस्व है। रसखान की सौन्दर्य–चेतना स्थूल देह एवं मांसलता से ऊर्ध्वोन्मुख होकर आध्यात्म में प्रभु–प्रेम में पर्यवसित हो जाती हैं। उनके रसखानि (कृष्ण) का सहज सौन्दर्य उसकी बांकी चितवन और तीक्ष्ण कटाक्ष के साथ ही उसकी मंद–मंद मुस्कराहट का सम्मोहन प्रेम–दग्ध ही नहीं करता वरन् विछोह–विदग्ध मन के अंतःताप को शमित भी करता है। अंतरात्मा में रस की सृष्टि करता हैं और प्राणों को मधुर प्रेम के आर्कषण से भर देता हैं।

''गोरज विराजै भाल लहलही वन माल आगे गैया पाछै ग्वाल गावें मृदुतान री।[19]
जैसी धुनि मधुर मधुर बांसुरी की तैसी बंक चितवनि मंद–मंद मुसकान री।।

कदम विटप के निकट तटनी के तट अटा चढ़ि देखि पीत पट फहरान री।
रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन प्राननि निझावै यह आवै रसखानि री।।

सौन्दर्य आभ्यान्तरिक (मन की) भी होता हैं और बाह्य (आंगिक) भी रसखान के आभ्यान्तरिक सौन्दर्य के अंतर्गत उनका प्रगाढ़ कृष्ण–प्रेम और उदास भावानुभूति हैं। वे सच्चे ह्रदय से आराध्य के प्रति समर्पित हैं। वे अन्यान्य योनियों में कृष्ण साग्निध्य के अभिलाषी है।

''मानुष हों तो वही रसखान बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।''[20]
''जो रसना रस ना बिलसैं तेहि देह सदा निज नाम उचारन।''
'खास निवास मिलै जुपै तौ वहीं कालिंदी–कूल–कदम्ब की डारन।'

रसखान का आंगिक (रूप) सौन्दर्य–विधान वैविध्यपूर्ण हैं। उन्होंने राध–कृष्ण की देह को देव–मंदिर मानकर विविध अंगों–प्रत्यंगों का रूपांकन किया हैं। परन्तु उनका रूप–वर्णन अंशतः रीतिकालीन नव–शिख–परम्परा से भी कहीं–कहीं प्रभावित प्रतीत होता हैं ; यथा–

''बागन काहे जाओ पिया घर बैठे बाग लगाय दिखाऊँ।[21]
एड़ी अनार सी मौर रही बहियाँ दोउ चंपे डार नवाऊँ।।
छातिन में रस के निबुआ अरू घूँघट खोल के दाख चखाऊँ।
टांगन के रसके चसके रति फूलनि की रसखानि लुटाऊँ।।

उक्त चित्र विरल हैं। वस्तुतः रसखान का रूप–वोध असाधरण हैं। उन्होने कृष्ण–रूप का अत्यंत सुरूचिपुर्ण वर्णन किया है। कवि ने कृष्ण की गौर–स्यापल कांति मुखमंडल नेत्र, भुकुटि–विलास, कपोल आदि और राधा की देह–यष्टि सुगठित अंगलता, वक्ष आदि से युक्त मानव–कलेवर के भव्य–सौन्दर्य की चित्रित किया हैं। कृष्ण–सौन्दर्य लोकोत्तर (दिव्य) सौन्दर्य की बड़े मनोयोग को रूपांकित किया है। कृष्ण–सौन्दर्य लोकोत्तर हैं। वे साक्षात् प्रभु हैं उनके इस सौन्दर्य का दर्शन पूर्व–संचित पुण्यों से ही होता हैं।

19. सुजान रसखान, सवैया – 264
20. वही – पृ0–01
21. वही – पृ0–16

''मोतिन माल बनी लट के लटकी लटवा लट घूँघरवारी।[22]

अंग ही अंग जराव लसै, अरू सीस लसै पगिया जरतारी।।
पूरव पून्यनि ते रसखानि, सु मोहिनी मूरति आनि निहारी।
चार्‌यो दिसानि की लै छवि, आनिकै झौके झरोखे में बाँके बिहारी।।''

रसखान की प्रिय रंग–स्थली कृष्ण का बाल–काल हैं। उन्होंने उसे भाव सौकुमार्यवश वरण किया हैं कृष्ण शैशव की कमनीय क्रांति ने उन्हें अत्यधिक रस–सिवत किया है। अतः कृष्ण–जीवन के स्वर्णोदय प्रभात, उनके बाल–रूप, बाल–मनोविज्ञान, उनकी भावाकुल मृदुलता, मधुरिमा के चतुर्दिक चित्र हैं रसखान की कविता में। कृष्ण की विश्वमोहिनी बाल–छवि उनका धूल धूसरित तन, उनका औत्सुक्यि–प्रमुदित सहज सरलपन, उनके निराले विस्मय– विमुग्धकारी नयन, उनकी सुन्दर चोटी रसखान को बेहद प्रिय है।

''धूलि भरे अति सोभित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।[23]
खेलत खात फिरै अंगना, पग पैजनि बाजत पीरि कछौटी।।
वा छवि को रसखानि विलोकत, वारत काम कला निधि कोटी।
काग के भागे बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयौं माखन रोटी।।

कवि को शैशव के साथ ही कृष्ण का तारूण्य और किशोरावस्था भी प्रिय हैं। प्रेम–रस संसिक्त यौवन, स्वच्छद बिहा, आवर्जनाओं का अधिकरण, मधुमय ऋतु–प्रभाव, यौवन की मादकता उद्दाम आवेग, मद विह्वल उन्माद और उल्लास तथा प्रेयसियों से छेड़–छाड़ की सुगढ़ तस्वीरें भी रसखान–काव्य में यत्र–तंत्र बिखरी पड़ी हैं। वस्तुतः तारूण्य बोध कवि के कामाध्यात्म का केन्द्र–बन्दु है। यही कारण हैं कि गोपियां कृष्ण–यौवन की लालसा में बेसुध रहती है। गोपियों का आकर्षण नैसर्गिक हैं और वह दैहिक तथा आध्यात्मिक क्षुधा तृधा की तुष्टि चाहता हैं। रसखान ने न केवल कृष्ण वरन् राधा के यौवन–लावण्य, उसके

22. सुजान रसखान, सवैया – 273
23. वही – 18

आंगिक रूप–सौन्दर्य तथा दोनों के परस्पर स्पर्श आलिंग्न के अनेक चित्र उतारे है। कृष्ण की बकदृष्टिगत चेष्टाओं, उनके कटाक्षपात का, बांकी चाल का मनोहारी दृश्य कवि ने उपस्थित किया है, तथा–

''वह घेरनि धेनु अबेर सबेरनि फेरनि लाल लकुटूनि की।[24]
वह तीछन चच्छु कटाछन की छवि मोरनि भौंह भुकुटूनि की।।
वह लाल की चाल चुभी चित में रसखानि संगीत उघुटूनि की।
वह पीत पटक्कनि की चटकानि लिटक्कनि मौर मुकुटूनि की।।''

कवि ने कृष्ण–सौन्दर्य के साथ ही राधा के शारीरिक सौष्ठव, उसके नेत्र कपोल, मुख, अधर, चिबुक, नासिका आदि का वर्णन प्रायः परस्परित उपमानों से ही किया हैं। राधा की श्री–शोभा, उसकी हाव–भाव–हेला, उसका निखरता हुआ तारूण्य और कामोद्दीप्त हास–विलास का वर्णन भी रसखान ने पूर्ण मनोयोग से किया हैं। समग्रतः राधा का सौन्दर्य किसी तरह भी कवि का कुत्सित सौन्दर्य– बोध नहीं हैं। उसका लावण्य ललित लोल उमंग की तरह भोवोत्तेजन और रससिक्त करने वाला हैं।

''अति लाल गुलालहु फूलतै फूल अली, अलि कुंतल राजत हैं।[25]
मुकता के कदंव के अंब के मौर सुने सुर कोकिल लाजत हैं।।
भखतूल समान के गुंज छरानन किंसकु की छवि छाजत हैं।
यह आन प्यारी जूकी रसखानि बसंत सी आजु बिराजत है।।

इसी सन्दर्भ में राधा–कृष्ण की प्रेम–केलि, उनके आर्लिगन–स्पर्श–बोध युक्त निम्न पंक्तियां भी दृष्टव्य हैं–

24. सुजान रसखान, सवैया – 140
25. वही – 238

''लाड़िली काल लसैं लखिये अलि पूंजन कूंजन में छवि गाढ़ी।[26]
ऊजरी ज्यों बिजुरी सी जुरी चहुँ गूंजरी केलि कला सम काढ़ी।।
त्यों रसखान न जानि परै सुखमा तिहुँ लोकनि की अति बाढ़ी।
लालन बाल लिये बिहरैं छहरै सिर मोरपखी ठग ठाढ़ी।।''

कुल मिलाकर रसखान का कृष्ण–बाल–बोध, किशोर–किशोरी का तारूण्य बोध तद्विषयक सौन्दर्य–चित्रण अत्यंत रमणीय, भावमय एवं श्लाध्य हैं।

रसखान रस सिद्वि कवि हैं। उन्होंने अपने काव्य में रस–सृष्टि तो की हैं। किन्तु रस–तत्व पर कोई चिन्तन–मनन नहीं किया। इन्द्रियों द्वारा अनुभूत सैन्दर्य में रस सौन्दर्य की सृष्टि करने वाले रसखान रस के शास्त्रीय पक्ष से अनभिज्ञ हैं। उनके काव्य में श्रृंगार का पूर्ण परिपाक हुआ हैं। वस्तुतः रसानुभूति के मूल में सौन्दर्यनूभूति होती है। रसखान काव्य सौन्दर्यानुभूति की दूष्टि से उसी तरह महत्वपूर्ण हैं जिस प्रकार से घनानंद काव्य किन्तु सौन्दर्य और उसकी अनुभूति के अन्यान्य पहलुओं को रेखांकित करने वाले रसखान काव्य को रस (श्रृगार) के शास्त्रीय पहलुओं की दूष्टि से भी विश्लेषित किया जा सकता हैं।

श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग एवं वियोग) के अन्यान्य आयामों–रूप–सौन्दर्य, प्रेम–व्यापार अथवा सघन प्रेम प्रसंग तथा विप्रलम्भ श्रृंगार के चारों सोपान (पूर्वराग, मान, करूणा, प्रवास) आदि–का सुन्दर प्रस्तुतीकरण रसखान–काव्य में हुआ है। यथा–

''जाको लसै मुख चंद समान कमानी सौं भौंह गुमान हरै।[27]
दीरग नैन सरोजन तै मृग खंजन मीन की पांत डरै।
रसखान उरोज निहारत ही मुनि कौन समाधि न जाहि टरै।''

रसखान ने सौन्दर्य वर्णन की दृष्टि से नायक और नायिका दोनों की सम्मोहक छवियों को रेखांकित किया हैं। नटवर कृष्ण की सघन घुंघराली

26. सुजान रसखान, सवैया – 141

केश–राशि, गोचारण के समय की विमोहक कांति, मधुर वाणी, दृष्टि भंगिमा, चेष्टागत सौन्दर्य, वाके नयन, त्रिभंगी शरीर–मुद्रा वाणीगत माधुर्य आदि वर्णन के साथ ही कृष्ण सौन्दर्य के समग्र प्रभाव का रेखांकन भी कवि ने बड़े मनोयोग से किया हैं। कृष्ण के आंगिक सौन्दर्य का विलक्षण प्रभाव दृष्टव्य हैं।

''नैननि बंक विसाल के बाननि झेलि सकै अरू कौन नबेली।[28]
बेधत है हिय तीछन कोर सुमार गिरी तिय कोंटिक हेली।।
छोडैं नहीं छिनहूँ रसखानि सु लागी फिरै द्रुम से जनु बेली।
रीरि परी छवि की ब्रजमंडल कुंडल गंडनि कुंतल केली।।''

राधा की देहयष्टि उसके नेत्रों उसके शारीरिक गठन, उसकी चिबुक आदि के सौन्दर्य की चर्चा रसखान ने बराबर की है। शरीर पर चंदन का लेप किये हुए राधा की शोभा अतुलनीय हैं यथा–

''तन चन्द खौर के बैटी भटू रही आजु सुधा की सुता मनसी।[29]
मनौ इन्दु बधून लजावन की सूब भांतनि काढ़ि धरी गन–सी।।
रसखानि विराजति चौकी कुचौ बिच उत्तमताहि जरी तन सी।
दमकै दूग–वान के धायन कौं गिरि संत के संधि के जोवन सी।।''

राधा और गोपी–कृष्ण के प्रेम व्यापार का विस्तार से वर्णन रसखान काव्य में हुआ हैं। रसिक शिरोमणि का अनन्त लीला–व्यापार, उनके गहन प्रेम का परि चायक हैं। उनका कुंजों में, वृक्षों के नीचे रास्–करना, फाग खेलना आदि प्रेम कीड़ाए संयोग श्रृंगार को पुष्ट एवं परिपक्व करने वाली है।

''अधर लगाइ रस प्याइ बाँसुरी बजाइ; मेरी नाम गाइ हाइ जादू कियौ मन मै।
रस रास सरस रंगीलो रसखान प्रानि, जान और जुगुति विलास कियों तन में।''

इसी प्रकार फाग वर्णन में संयोग के अभिनव चित्र दर्शनीय हैं।

28. सुजान रसखान, सवैया – 40
29. वही – 142

''आवत लाल गुलाल लियैं मगसूने मिली इक नार नवीनी।
त्यौं रसखानि लगाइ हियें भटू मौज कियौ मन माहिं अधीनी।।
सारी फटी सुकुमानि हटी अंगिया दरकी सरकी रस भीनी।
गाल गुलाल लगाइ कै अंक रिझाय बिदा करि दीनी।।''[30]

इस तरह रसखान–काव्य में श्रृंगार के सम्भोग पक्ष के रूप–चित्र प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध होते हैं। रसखान आचार्य कवि नहीं, भावुक कवि हैं। अतः उनके काव्य में नायिका भेद–वर्णन का निर्वाह प्रायः नहीं हुआ हैं किन्तु प्रयास करने से कुछ उद्वरण खोंजे जा सकते हैं।'आगत पतिका' की मुरझाई देह बल्लरी प्रियतम आगमन के सुसंवाद से प्रमुदित गई हैं।

''नाह–वियोग बढ़्यौं रसखानि मलीन महा दुति देहतिया की।[31]
पंकज सौ मुख गौ मुरझाय लगीं लपटें बरि स्वांस हिया की।।
ऐसे में आवत कान्ह सुने हुलसै तरकींजु तनी अंगियाँ की।
योंजग जोति उठी तन की उसाइ दई मनौ बाती दिया की।।,

रसात्मक–सौन्दर्य के विप्रलम्भ–पक्ष की दृष्टि से रसखान का काव्य बड़ा विलक्षण है। वियोग काल की संचित मानस–छवियों को रूपायित करने में कवि पूर्णतः सिद्वहस्त है। रसखान पूर्वराग संबंधी सूक्ष्मातिसूक्ष्य उद्भावनाओं के धनी हैं। कृष्ण के नेह–स्नेह में निमग्न गोपियों की कल्पना प्रवण अनुभूतियां सविशेप मुखर हुई हैं। यथा–

''उनही के सनेहन सानी रहैं उनहीं के जु नेह दिवानी रहैं।[32]
उनहीं की सुनैन औ बैन त्यौ सैन सौं चैन अनेकन ठानी रहैं।।
उनहीं संग डोलन मैं रसखानि सबै सुख सिन्धु अधानी रहै।
उनहीं बिन ज्यौं जलहीन ह्वै मीन आँखि मेरी अँसुवानी रहैं।।

30. सुजान रसखान, सवैया – 120
31. वही – 105
32. वही – 30

रागात्मक संवेदनओं में मानिरी प्रिया का रूठना अत्यधिक स्पर्शी होता हैं। नायिका का मान संबंधी वर्णन भी रसखान ने रस–प्रेरित होकर किया है। यथा–

''प्रिय सों तुमि मान कर्यों कत नागरि आजु कहा किनहूँ सिख दीनी।

प्रयारा की विविध अनुभूतियों से रस–स्निग्ध है रसखान का काव्य मदन–दहन जैसा प्रवास काल में होता हैं वैसा पूर्वराग में कहां? रसखान की कविता में प्रवास की टीस और तज्जन्य प्रकत्पनाएं बड़ी ह्रदयस्पर्शी बन पड़ी हैं। यथा–

''मग हेरत धूँधरे नैन भये रसना रट वा गुन गावन की।[1]
अंगुरी गनि हार थकी सजनी सगुनौती चलै नहिं पावन की।।
पथिकौ कोउ ऐसो जु नाहिं कहै सुधि है रसखानि कै आवन की।
मन भावन आवन सावन में कही औधि करी डग बावन की।।''

सम्प्रति रसखान का रस–सौन्दर्य उनकी आंतर अनुभूतियों और मूल संवेदनाओं से सम्पन्न हैं। कवि की रागात्क चेतना उसकी आत्मिक सौन्दर्यानुभूति, उसकी रस–चर्वणा सर्जनात्मक शक्ति के सहारे प्रतिच्छवित हुई है। रसखान रस–धर्मी सर्सान्दर्यदर्शी हैं। उनका श्रृंगार वर्णन भावक और भावुक दोनों के लिए आस्वाद्य हैं, अस्तु वह रसमयी है।

इस प्रकार हम पाते हैं कि रसखान के काव्य में प्रेम की वेगवती धारा बहती है। उनके भक्ति–भाव की धारा रसमयी है। उनके वर्णन में संयोग एवं वियोग धारा का प्रवाह है। उनके श्रृंगार वर्णन में सौन्दर्य सहवर्ती बन कर आया हैं इस प्रकार उनका प्रेम वर्णन रसानुभूति से पूर्ण है।

रसखान प्रेम को एक शिखा के रूप में देखते हैं, जो वियोग के ताप में सुलगती रहती है।

33. सुजान रसखान, सवैया – 231

अध्याय–5

संदर्भ–ग्रन्थ :–

क्रमांक –1. सं0 डॉ0 नागेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ0–236

2. रसखान : प्रेम वाटिका, पृ0–12

3. सुजान रसखान सवैया, पृ0–10

4. वही पृ0–13

5. वही पृ0–22

6. वही पृ0–260

7. वही पृ0–225

8. वही पृ0–100

9. वही पृ0–226

10. सुजान रसखान, पृ0–11

11. सं0 विद्यानिवास मिश्र : रसखान रचनावली, पृ0–136

12. वही पृ0–136

13. वही पृ0–136

14. सुजान रसखान सवैया, पृ0–18

15. वही पृ0–62

16. सुजान रसखान सवैया, पृ0–125

17. वही पृ0–41

18. वही पृ0—32

19. सुजान रसखान सवैया, पृ0—264

20. वही पृ0—01

21. वही पृ0—16

22. सुजान रसखान सवैया, पृ0—273

23. वही पृ0—18

24. वही पृ0—140

25. वही पृ0—238

26. वही पृ0—141

27. वही पृ0—218

28. सुजान रसखान सवैया, पृ0—40

29. वही पृ0—142

30. सुजान रसखान सवैया, पृ0—120

31. वही पृ0—105

32. वही पृ0—30

33. सुजान रसखान सवैया, पृ0—231